

---

## Narasimha Stotra

---

# नरसिंहस्तोत्र अथवा नरसिंहस्तुतिः

---

## Document Information

---

Text title : narasiMha stotra 1

File name : narasimha.itx

Category : vishhnu, dashAvatAra, stotra, vishnu

Location : doc\_vishhnu

Transliterated by : H. P. Raghunandan, Shrisha Rao, first March 18, 1996

Proofread by : H. P. Raghunandan, Shrisha Rao

Description-comments : It is unclear if likuchatilakasUnuH in the end refers to trivikramAchArya or his son nARyaNa paNDita

Latest update : January 22, 2022

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

October 7, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

नरसिंहस्तोत्र अथवा नरसिंहस्तुतिः



उदयरवि सहस्रद्योतितं रूक्षवीक्षं  
प्रळय जलधिनादं कल्पकृद्धि वक्रम् ।  
सुरपतिरिपु वक्षश्छेद रक्तोक्षिताङ्गं  
प्रणतभयहरं तं नारसिंहं नमामि ॥

प्रळयरवि कराळाकार रुक्कवालां  
विरळय दुरुरोची रोचिताशान्तराल ।  
प्रतिभयतम कोपात्त्युत्कटोच्चाट्टहासिन्  
दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ १ ॥

सरस रभसपादा पातभाराभिराव  
प्रचकितचल सप्तद्वन्द्व लोकस्तुतस्त्वम् ।  
रिपुरुधिर निषेकेणैव शोणाङ्घ्रिशालिन्  
दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ २ ॥

तव घनघनघोषो घोरमाघ्राय जङ्घा  
परिघ मलघु मूरु व्याजतेजो गिरिञ्च ।  
घनविघटतमागाहैत्य जङ्घालसङ्घो  
दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ ३ ॥

कटकि कटकराजद्वादृ काय्यस्थलाभा  
प्रकट पट तटित्ते सत्कटिस्थातिपट्टी ।  
कटुक कटुक दुष्टटोप दृष्टिप्रमुष्टौ  
दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ ४ ॥

प्रखर नखर वज्रोत्वात रोक्षारिवक्षः  
शिखरि शिखर रक्तयराक्तसंदोह देह ।  
सुवलिभ शुभ कुक्षे भद्र गम्भीरनाभे  
दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ ५ ॥

स्फुरयति तव साक्षात्सैव नक्षत्रमाला  
 क्षपित दितिज वक्षो व्याप्तनक्षत्रमार्गम् ।  
 अरिदरधर जान्वासक्त हस्तद्वयाहो  
 दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ ६ ॥

कटुविकट सटौघोद्धट्टनाद्धृष्टभूयो  
 घनपटल विशालाकाश लब्धावकाशम् ।  
 करपरिघ विमर्द प्रोद्यमं ध्यायतस्ते  
 दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ ७ ॥

हठलुठ दल घिष्टोत्कण्ठदशोष्ठ विद्युत्  
 सटशठ कठिनोरः पीठभित्सुष्टुनिष्ठाम् ।  
 पठतिनुतव कण्ठाधिष्ठ घोरात्रमाला  
 दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ ८ ॥

हत बहुमिहि राभासह्यसंहाररंहो  
 हुतवह बहुहेति हेपिकानन्त हेति ।  
 अहित विहित मोहं संवहन् सैहमास्यं  
 दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ ९ ॥

गुरुगुरुगिरिराजत्कन्दरान्तर्गतेव  
 दिनमणि मणिशृङ्गे वन्तवह्निप्रदीप्ते ।  
 दधदति कटुदंष्ट्रे भीषणोज्जिह्व वक्त्रे  
 दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ १० ॥

अधरित विबुधाब्धि ध्यानधैर्यं विदीध्य  
 द्विविध विबुधधी श्रद्धापितेन्द्रारिनाशम् ।  
 विदधदति कटाहोद्धट्टनेद्धाट्टहासं  
 दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ ११ ॥

त्रिभुवन तृणमात्र त्राण तृष्णान्तु नेत्र-  
 त्रयमति लघितार्चिर्विष्ट पाविष्टपादम् ।  
 नवतर रवि ताम्रं धारयन् रूक्षवीक्षं  
 दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ १२ ॥

भ्रमद भिभव भूभृद्भूरिभूभारसद्भिद्-

भिदनभिनव विदभ्रू विभ्र मादभ्र शुभ्र ।  
 ऋभुभव भय भेत्तर्भासि भो भो विभोऽभि-  
 दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ १३ ॥  
 श्रवण खचित चञ्चत्कुण्ड लोच्चण्डगण्ड  
 भ्रुकुटि कटुललाट श्रेष्ठनासारुणोष्ठ ।  
 वरद सुरद राजत्केसरोत्सारि तारे  
 दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ १४ ॥  
 प्रविकच कचराजद्रत्न कोटीरशालिन्  
 गलगत गलदुस्रोदार रत्नाङ्गदाढ्य ।  
 कनक कटक काञ्ची शिञ्जिनी मुद्रिकावन्  
 दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ १५ ॥  
 अरिदरमसि खेटौ बाणचापे गदां सन्-  
 मुसलमपि दधानः पाशवर्याङ्कुशौ च ।  
 करयुगल धृतान्त्रस्रग्विभिन्नारिवक्षौ  
 दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ १६ ॥  
 चट चट चट दूरं मोहय भ्रामयारिन्  
 कडि कडि कडि कायं ज्वारय स्फोटयस्व ।  
 जहि जहि जहि वेगं शात्रवं सानुबन्धं  
 दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ १७ ॥  
 विधिभव विबुधेश भ्रामकाग्नि स्फुलिङ्ग  
 प्रसवि विकट दंभ्रोज्जिह्ववक्र त्रिनेत्र ।  
 कल कल कलकामं पाहिमां ते सुभक्तं  
 दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ १८ ॥  
 कुरु कुरु करुणां तां साङ्करां दैत्यपोते  
 दिश दिश विशदांमे शाश्वतीं देवदृष्टिम् ।  
 जय जय जय मुर्तेऽनार्त जेतव्य पक्षं  
 दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ १९ ॥  
 स्तुतिरिहमहितघ्नी सेवितानारसिंही  
 तनुरिवपरिशान्ता मालिनी साऽभितोऽलम् ।  
 तदखिल गुरुमाय्य श्रीधरूपालसद्भिः

सुनिय मनय कृत्यैः सद्गुणैर्नित्ययुक्ताः ॥ २० ॥

लिकुचतिलकसूनुस्सद्धितार्थानुसारी

नरहरि नुतिमेतां शत्रुसंहार हेतुम् ।

अकृत सकल पापध्वंसिनीं यः पठेत्तां

व्रजति नृहरिलोकं कामलोभाद्यसक्तः ॥ २१ ॥

इति कविकुलतिलकत्रिविक्रमपण्डिताचार्यविरचिता श्रीनरसिंहस्तुतिः समाप्ता ।

अथवा

इति कविकुलतिलक श्री त्रिविक्रमपण्डिताचार्यसुत

नारायणपण्डिताचार्य विरचितम् श्रीनरसिंहस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

॥ भारतीरमणमुख्यप्राणान्तर्गत श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

There has been a conflict in interpreting

the likuchatilakasUnuH statement

about the authorship of the stuti.

Some consider it is by trivikramAchArya

as a son in the lineage of likucha, some

consider it as son of trivikramAchArya,

that is nArAyaNapaNDitAchArya. It seems

Narayanapandita also wrote another narasimha

stuti which has 39 verses. (The stotra

mahodadhi, 1926 (Belgaum) Collection of

Madhva stotras, pp. 125-126, where it is to

be found is not available.)

Encoded and proofread by H. P. Raghunandan. Shrishra Rao



*Narasimha Stotra*

pdf was typeset on October 7, 2023



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

